

राजदेव मण्डल

गाम : मुसहरनियाँ (मधुबनी)
साहित्यकार (मैथिली एवम् हिन्दी साहित्य)
करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

हम छी ऐ अंचलक किसान
देशक बढ़ेबाक अछि मान-सम्मान
बचेबाक अछि सबहक प्राण
भूखसँ दिएबाक अछि त्राण
हम करब संघर्ष नै छी बेजान
फेरसँ गाएब कृषि गान।

'बसुन्धरा' (काव्य संग्रह- 2013)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राजदेव मण्डल
गाम : मुसहरनियाँ (मधुबनी)
साहित्यकार (मैथिली एवम् हिन्दी साहित्य), करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

हम नुकाएल छी ओहीठाम
जेतए सभ किछुक लगि रहल दाम
नोंचि नेने अछि ओ सभ
हमरा देहक मासु-हाड़
अंग-अंग छोड़ा कऽ
कऽ देने अछि तार-तार
नेने हाथमे हाड़
हँसैत अछि बेसम्हार
हम देखै सभ किच्छो
कानै छी जार-जार।

'बसुन्धरा' (काव्य संग्रह- 2013)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राजदेव मण्डल
गाम : मुसहरनियाँ (मधुबनी)
साहित्यकार (मैथिली एवम् हिन्दी साहित्य), करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

लेने छी हाथमे
मनक तरूआरि
तरासि-तरासि अंगसँ
देबै उतारि
पोर-पोरसँ तोड़ि रहल छी
मनकेँ ओनएसँ मोड़ि रहल छी।

'बसुन्धरा' (काव्य संग्रह- 2013)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राजदेव मण्डल
गाम : मुसहरनियाँ (मधुबनी)
साहित्यकार (मैथिली एवम् हिन्दी साहित्य), करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

परबाक छै भागे जरल

एहेन अतिथि जँ पहुँचल दुआरि
पोसा परबाकेँ दियौ आइ मारि
एहेन लोक कहिया आएत से नै जानि
फेर हेतै परबा बात लिअ मानि।
पानिमे डुमा कऽ जरबैन लेलक जान
परबाकेँ भेल मनुखक पहचान।

'बसुन्धरा' (काव्य संग्रह- 2013)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राजदेव मण्डल
गाम : मुसहरनियाँ (मधुबनी)
साहित्यकार (मैथिली एवम् हिन्दी साहित्य), करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

हरक नाशपर सबहक आश
चहुदिस छिटकल हरिअर प्रकाश
उस्सर धरतीपर अहाँ
लिखै छी नव-नव इतिहास
अहीं कऽ सकै छी अन्नदान
जय हे किसान, जय हे किसान।

'बसुन्धरा' (काव्य संग्रह- 2013)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)